EPC-1 Reading and Reflecting on Texts

Q.1. Define speaking. What do you mean by levels of reading.
वाचन को परिभाषित करें। वाचन स्तर से आप क्या समझते हैं?

Ans: वाचन से तात्पर्य है भाषा में प्रयुक्त लिपि- प्रतीकों को पहचानते हुए उनके आधार पर अर्थग्रहण करना। बोलना- कौशल वस्तुतः किसी एक विशेषता का प्रतीक नहीं है बल्कि यह अनेक कुशलताओं का समन्वित रूप है। प्रत्येक भाषा- अध्यापक इसकी विविध परिभाषाएँ दे सकता है। उसकी दृष्टि मुख्यतः इस कौशल के शिक्षण से संबंधित उद्देश्य पर आधारित होती है, अतः वाचन की परिभाषा एक सामान्य प्रक्रिया के रूप में नहीं दी जा सकती। वाचन को एक सहज एवं सरल प्रक्रिया भी नहीं कहा जा सकता। इसमें अनेक जटिल मानसिक प्रक्रियाएँ सम्मिलित हैं। अपने साधारणतम रूप में यह भाषा की लिपिबद्ध व्यवस्था से संबंधित है, परन्तु केवल लिपिबद्ध व्यवस्था का उच्चारण ही वाचन का प्रतीक नहीं बन सकता। भाव- ग्रहण एवं बोधन महत्वपूर्ण पक्ष हैं, भाषा के लिखित रूपों

का बोधन अपेक्षाकृत जटिल प्रक्रिया है। इसमें अनेक कौशलों में अर्जित कुशलताएँ आवश्यक होती है। छात्र में वाचन संबंधी कुशलताओं को विकसित करने के लिए वाचन की संकल्पना से परिचित होना आवश्यक है।

वाचन- कौशल का अर्थ है भाषा के लिपि - प्रतीकों की पहचान तथा ध्वनि प्रतीकों के साथ उनका संबंध स्थापित करते हुए अर्थग्रहण करना। अन्य भाषा का अध्येता भाषा में श्रवण तथा भाषण- कौशल से परिचित होता है। उसे शब्दों, वाक्यांशों तथा वाक्यों की समुचित जानकारी होती है। वाचन- कौशल में वह भाषा में प्रयुक्त लिपि प्रतीकों को पहचानना सीखता है और स्वनिम - वर्णिम- संबंध स्थापित करता है। इस प्रकार वह भाषा के लिपिबद्ध रूप को देखकर पहचानना और उसमें निहित विचारों तथा भावों को समझना सीखता है।

वाचन के मुख्य रूप से दो रूप होते है :—

(i) लिपि - प्रतीकों की पहचान

(ii) भाव तथा अर्थ - ग्रहण

(i) लिपि - प्रतीकों की पहचान :— वाचन में लिपि - प्रतीकों की दृष्टि द्वारा पहचान की

योग्यता प्राथमिक आवश्यकता है। छात्र इस क्रम में लिपि-प्रतीकों की बनावट को पहचानना, उनसे द्योतित ध्वनियों को समझना सीखता है। इस प्रकार वह स्वनिम-वर्णिम संबंध से परिचित होता है। इसके आधार पर उसमें इनसे गठित शब्दों, वाक्यांशों तथा वाक्यों को पहचानने की, उनकी विशिष्टता को समझने की तथा उनमें अन्तर करने की योग्यता विकसित हो जाती है।

(ii) भाव तथा अर्थग्रहण :- भाव तथा अर्थग्रहण वाचन-प्रक्रिया का दूसरा महत्वपूर्ण स्तर है। अध्येता शब्दों, वाक्यांशों तथा वाक्यों को पहचानने के साथ-साथ उनसे अभिव्यक्त भावों तथा विचारों को समझना सीखता है। भाषा के लिखित रूप को देखकर मौन रूप से अथवा उसके सस्वर वाचन द्वारा छात्र विचारों तथा भावों को समझना सीखता है। इस प्रकार भाषा के लिपिबद्ध रूप के प्रत्यक्षीकरण द्वारा वह व्यक्त किए गए विचारों तथा भावों को आत्मसात करता है।

उपर्युक्त विवेचना से यह स्पष्ट है कि इन छोनों में से किसी एक प्रक्रिया को वाचन का द्योतक नहीं माना जा सकता। वाचन इनकी समन्वित निष्पत्ति है। वाचन की कुशलता लिपि-प्रतीकों की पहचान पर आधारित है, लिपि-प्रतीकों की पहचान के माध्यम से छात्र-स्वनिमों एवं वर्णिमों में संबंध स्थापित करना सीखता है तथा शब्दों, वाक्यांशों और वाक्यों से द्योतित अर्थ को समझता है।